मुग़लकालीन चित्रकलाः एक विवेचन

शालिनी
शोध छात्रा, इतिहास विभाग,
रघुनाथ गर्ल्स (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

ईमेलः spsamathal@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

शालिनी

''मुग़लकालीन चित्रकला : एक विवेचन''

Artistic Narration 2020,
Vol. XI No. II
Article No. 27 pp. 174-181

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xi-no-2-july-dec-2020/

सारांश

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में चित्रकला का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में आदिकाल एवं प्राचीनकाल की चित्रकला के अवशेष अनेकों गुफाओं में प्राप्त होते हैं, जबकि मध्यकाल के मुग़लकाल में ''मुग़ल चित्रकला'' का भी उल्लेखनीय महत्व है। 'मुग़ल चित्रशैली' को हुमायूँ, अकबर तथा जहाँगीर जैसे कलाप्रेमी मुग़ल शासकों ने रूचिपूर्वक अपना संरक्षण दिया। भारतवर्ष के इतिहास में मुग़लकालीन शासन और समाज की सौन्दर्यप्रियता का ऐसा उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलता।

मुख्य शब्दः

परिचय, आदिकालीन चित्रकला, प्राचीनकालीन चित्रकला, मध्यकालीन चित्रकला, सल्तनतकाल, मुग़लकालीन चित्रकला (अकबरकालीन चित्रकला, जहाँगीरकालीन चित्रकला, शाहजहाँकालीन चित्रकला), मुग़ल चित्रकला का पतन, मुग़ल चित्रकला का ऐतिहासिक महत्व, निष्कर्ष।

प्रस्तावना

जिस प्रकार महासागर में अनेकों नदियां मिलकर एक हो जाती हैं, ठीक उसी प्रकार भारतीय संस्कृति अनेक देशी–विदेशी सांस्कृतिक तत्वों को ग्रहण करते हुये और भी गौरवशाली तथा वृहद् होती रही है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रमुख तत्वों में 'चित्रकला' का विशेष स्थान रहा है। वर्तमान समय में हमें इतिहास को जानने के सबसे प्राचीनतम साक्ष्य, चित्रों के रूप में ही प्राप्त होते हैं। इस प्रकार इतिहास विषय के सन्दर्भ में चित्रों का महत्व स्वतः ही बढ़ जाता है।

आदिकालीन चित्रकला

चित्रकला का इतिहास उतना ही पुराना कहा जा सकता है, जितना मानव का इतिहास।[1] आदिकाल में जब मानव का उदय हुआ और धीरे–धीरे उसका विकास हुआ, तब वह अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति हेतु किसी भी प्रकार की भाषा का प्रयोग नहीं करता था अर्थात् तब भाषा का विकास भी नहीं हुआ था, तब वह अपने मनोभावों को संकेतों एवं रेखाओं द्वारा अभिव्यक्त करने लगा। आदिमानव ने इन संकेतों के धरातल हेतु गुफाओं एवं कन्दराओं की दीवारों को चुना तथा किसी भी नुकीली वस्तु, जैसे– लकड़ी, पत्थर आदि की सहायता से आड़ी–तिरछी रेखाओं को खींचना प्रारम्भ किया। इस प्रकार जो भी आकृति बनी, वह चित्र के रूप में दीवार पर अंकित हो जाती थी। इस प्रकार धीरे–धीरे चित्र बनाने की प्रवृत्ति का विकास होता गया।

आज हम उन्हीं चित्रों के माध्यम से आदिमानव की जीवन–चर्या, रहन–सहन आदि का अनुमान लगा पाते हैं। गुफाओं तथा कन्दराओं आदि में जो भी रेखीय (लीनियर) चित्र प्राप्त होते हैं, वे पशुओं, वक्षों, आखेट, हथियारों आदि के हैं, चूँकि आदिमानव के जीवन से सम्बन्धित तत्कालीन कोई भी लिखित साक्ष्य नहीं मिलते, अतः इतिहास में इन चित्रों का महत्व स्वतः ही बढ़ जाता है।

जिस प्रकार बीतने के साथ–साथ अविष्कारों, प्रयोगों तथा खोजों आदि के द्वारा सभ्यता का विकास होता गया उसी प्रकार मानव अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम भी विकसित करता गया। आदिकालीन चित्रों के अवशेष हमें बेल्लारी, सिंहनपुर, मिर्जापुर, मानिकपुर, पंचमढ़ी, होशंगाबाद, मंदसौर, भोपाल क्षेत्र तथा भीम बेटका आदि में मिलते हैं।

प्राचीनकालीन चित्रकला

प्राचीनकालीन चित्रकला के अन्तर्गत सिन्धु सभ्यताकालीन मोहनजोदड़ों, हड़प्पा तथा लोथल नगरों के अवशेष मात्र रह जाने से चित्रकला का ठीक ज्ञान नहीं हो पाता। जो भी चित्र प्राप्त होते हैं, वे बर्तनों, टिकरों एवं विचित्र मृतिका पात्रों पर बनी चित्रकारी से प्राप्त होते हैं।[2] इनमें आलेखन, ज्यामितीय तथा पशु–पक्षियों, वृक्षों आदि की आकृतियां अंकित हैं। वैदिककालीन भित्ति चित्रकला के प्रमाण जो उपलब्ध हैं वे चित्र आज 'जोगीमारा' की गुफाओं में ही प्राप्त हैं अन्यथा इस काल की चित्र परम्परा का अनुमान लगाने के लिये साहित्यिक प्रसंगों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। भारतीय राजवंशों के संरक्षण में पल्लविंत चित्रकला को बुद्ध के काल से (500 ई०पू०) आरम्भ हुआ मानना उचित है। रामायण, महाभारत, बौद्ध तथा जैन साहित्य में चित्रकला–विषयक सामग्री का व्यापक भण्डार है।

अतः प्राचीन काल से सम्बन्धित चित्र हमें जोगीमारा, अजन्ता, एलोरा के अतिरिक्त बाघ, बादामी, सिगरिया तथा सित्तनवासल की गुफाओं में देखने को मिलते हैं। इन गुफाओं के चित्रों के दर्शन व

अध्ययन करने पर पता चलता है कि ये मुख्यतः धर्म प्रधान व आध्यात्मिक चित्र हैं जो कि बौद्ध तथा शैव आदि धर्मों से सम्बन्धित हैं। तत्कालीन राजाओं ने चित्रकारों को संरक्षण तथा आश्रय दिया और चित्र परम्परा के विकास में योगदान दिया। इन गुफाओं के भित्ति चित्रों व मूर्तियों को देखकर हमें कलाकारों (मूर्तिकारों, चित्रकारों तथा वस्तुकारों) की कुशलता का पता चलता है। इनसे हमें तत्कालीन जीवन व आध्यात्म की झाँकी, जैसे– वेशभूषा, भावभंगिमायें, हस्त–मुद्रायें, आभूषण, केशसज्जा आदि की जानकारी मिलती है। यदि सिर्फ अजन्ता की बात करें तो पूरा अजन्ता **'बुद्ध के आध्यात्म'** में डूबा प्रतीत होता है।

मध्यकालीन चित्रकला

700 ई० से 1600 ई०[3] तक की चित्र परम्परा को 'पोथियों की चित्रकला' कहा जाता है। इस काल में अनेक कला विषयक साहित्यिक ग्रन्थों की रचना हुई, जैसे पूर्व मध्यकाल में विष्णु धर्मोत्तर पुराण, चित्रलक्षण आदि। 1000 ई० से 1550 ई० तक (उत्तर मध्यकाल में)[4] चित्रकला से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों की रचना हुई, जैसे– सुर संदरीकहा, तरंगवती, कर्ण सुन्दरी, कथा सरितसागर, वृहत्कथा मंजरी तथा परमपुराण आदि। इस काल में हमें अनेक चित्रशैलियों का परिचय मिलता है, जैसे– पाल शैली, जैन शैली, अपभ्रंश शैली आदि।

सल्तनत काल

इसी क्रम में जब भारतीय इतिहास के मध्यकाल के सल्तनत काल की बात करें तो पता चलता है कि इस काल में चित्र बनाने की परम्परा न के बराबर ही रही। तत्कालीन साहित्य के माध्यम से पता चलता है कि मुसलमानों के भारत आने पर अन्य कलाओं की भांति चित्रकला के क्षेत्र में भी काफी परिवर्तन आ गया, क्योंकि सल्तनतकालीन शासक चित्र बनाने को धर्म (इस्लाम) के विरूद्ध मानते थे। अन्य कलाओं, जैसे– स्थापत्य, संगीत, साहित्य आदि का तो विकास हुआ परन्तु **'चित्रकला'** का नहीं। सल्तनत काल को चित्र परम्परा को **'अंधकार युग'** कहा जाता है। इस समय बहुत ही कम चित्र प्राप्त होते हैं और साहित्य में भी उनके विषय में अधिक जानकारी नहीं मिलती।

मुग़लकालीन चित्रकला

भारत में उल्लेखनीय चित्रकारी बौद्धकाल के बाद मुग़ल काल में ही हुई है।[5] मुग़ल चित्रशैली मुस्लिम कला का ही एक रूप है जिसका विकास मुग़ल सम्राटों के प्रचार में हुआ। भारतीय इतिहास व राजनीति में मुग़लों का आगमन क्रान्तिकारी रहा, परन्तु इससे बढ़कर क्रान्ति उनके सम्पर्क से कला के क्षेत्र में हुई। मुग़ल बादशाहों के संरक्षण में जीवित रहने वाली कला में अद्भुत प्रगति हुई।

मुग़ल चित्रशैली का जन्म उत्थान व पतन मुग़ल काल के उत्थान–पतन की तरह रहा है।[6] मुग़ल चित्रशैली पर ईरानी तथा भारतीय दोनों शैलियों का प्रभाव रहा। इस प्रकार मुग़लकालीन चित्र न तो शुद्ध रूप से भारतीय है और न ही ईरानी।

- सन् 1526 ई० में **बाबर** ने इब्राहिम लोदी को पराजित कर, भारत में मुग़ल साम्राज्य की नींव रखी, बाबर अपने अल्प शासन काल में चित्र परम्परा पर विशेष ध्यान नहीं दे सका। बाबर एक महान कला प्रेमी था, उसकी चित्रकला में विशेष रुचि थी। उसने अपनी आत्मकथा **'तुजुक–ए–बाबरी'** या **'बाबरनामा'** में अपने चित्रकला के प्रति प्रेम और 'बिहजाद' के चित्रों

की प्रशंसा के विषय में लिखा है। इससे स्पष्ट है कि उसने बिहजाद (ईरान का सबसे उच्च कोटि का चित्रकार) के चित्रों का आलोचनात्मक अध्ययन किया था। इस कारण यह भी कहा जाता है कि बाबर भारत में 'बिहजाद' (ईरानी) की कला लेकर आया था। बिहजाद को 'पूर्व का रैफेल' पुकारा गया है।[7]

- बाबर के बाद उसका पुत्र **'हुमायूँ'** सिंहासारूढ़ हुआ, वह भी साहित्य तथा चित्रकला के प्रति लगाव रखता था। जब हुमायूँ षेरषाह से पराजित होकर ईरान पहुंचा तो उसने वहां चित्रकला के प्रति विशेष रूचि ली। वह 10 वर्श तक ईरान के **शाहताहमास्प** का मेहमान रहा था, फिर वहां से वापस लौटने पर उसने ईरान के दो चित्रकारों **'ख्वाजा अब्दुस्समद (शीराजी)'** और **'मीर सैय्यद अली'** को अपने दरबार में बुला लिया था। ऐतिहासिक उल्लेखों के अनुसार हुमायूँ ने इन दोनों चित्रकारों से चित्रकला के विषय में अनेक बाते सीखीं। इनकी अध्यक्षता में स्वयं हुमायूँ तथा बालक अकबर ने चित्रकला का अभ्यास किया।[8]

सन् 1555 ई० में हुमायूँ पुनः दिल्ली तख्त पर बैठा और **उपरोक्त दोनों चित्रकार भारत में ईरानी चित्रशैली के प्रवर्तक हुये।** हुमायूँ ने इन दोनों चित्रकारों से **'दास्ताने–अमीर–हमज़ा'** चित्रावली तैयार करानी आरम्भ की जिसका कुछ अंश ही हुमायूँ के काल में पूर्ण हो पाया था। उसके बाद भी **'दास्ताने–अमीर–हमज़ा'** की चित्रकारी होती रही। **हम्ज़ानामा चित्रावली मुग़ल चित्रशैली का उद्‌गम ग्रन्थ माना जाता है।**

अकबरकालीन चित्रकला

हुमायूँ की मृत्यु के बाद **अकबर** के काल चित्र बनाने की परम्परा जारी रही और ईरानी शैली को भारतीय शैली में ढालकर चित्रशैली के क्षेत्र में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। भारत में चित्रशैली पर ईरानी प्रभाव अकबर के काल में कम होता गया और उसमें कुछ **राजस्थानी, कश्मीरी तथा ईरानी तत्वों के मिश्रण से एक स्वतन्त्र चित्रशैली विकसित हुई, जिसे 'मुग़ल शैली' कहा जाता है।** इसके अतिरिक्त कहीं–कहीं यूरोपीय तथा चीनी प्रभाव भी परिलक्षित होता है।[9]

अकबर ने सांस्कृतिक विकास के लिये अनेकों कार्य किये। चूंकि उसे सभी कलाओं में रूचि थी, इसलिये उसने साहित्य, स्थापत्य तथा चित्रकला को भरपूर संरक्षण दिया। मुग़ल काल में चित्रकला का सर्वाधिक विकास अकबर के काल में ही हुआ। उन्होंने सन् 1557 ई० में एक **'चित्रशाला'** का भी निर्माण भी कराया, जिसमें अनेक चित्रकार नियुक्त किये गये। इस चित्रशाला में अत्यधिक चित्रों के बनने के कारण इसे चित्रों का कारखाना भी कहा जाता था। अबुल फज़ल ने **'आईन–ए–अकबरी'** में चित्रकला के विषय में बहुत कुछ लिखा है। उसने तत्कालीन श्रेष्ठ चित्रकारों की संख्या 100 तथा साधारण चित्रकारों को अनगिनत बताया है। हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों धर्मों के चित्रकार मिलकर चित्र बनाते थे। अकबर ने चित्रकारों को अपने दरबार में आश्रय के साथ–साथ उच्च सम्मान और आदर भी दिया।[10]

अकबर के काल में अनेक चित्रित ग्रन्थों की रचना हुई जिसमें एक पृष्ठ पर घटना का लिखित वर्णन तथा अग्र ही उस घटना से सम्बन्धित चित्र की रचना की जाती थी। अकबर ने अनेक भारतीय तथा अभारतीय साहित्य जीवनी, कहानियों तथा धार्मिक ग्रन्थों का अनुवाद कराया और उन्हें चित्रित भी करवाया। इनमें से मुख्य चित्रित ग्रन्थ हैं– **हमजानामा, देवल देवी खिज्र खां, तूतीनामा,**

अनुवाद–ए–सुहैली, तारीखे–खानदाने तैमुरिया, रम्जनामा, दीवान–ए–हाफिज, रामायण, बाबरनामा, योग वशिष्ठ, अयार–ए–दानिश, अकबरनामा आदि।

अकबर के समय के प्रमुख चित्रकारों में मीर सैय्यद अली, ख्वाजा अब्दुल समद शीराजी, दसवन्त, बसावन तो प्रमुख हैं ही, इनके अतिरिक्त लाल, मुकुन्द, मधु, जगल आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं। **डॉ० आशीर्वादी लाल** के शब्दों में– "अकबर के कला प्रेम ने कुशल चित्रकारों को उसके दरबार की ओर आकर्षित किया और मुग़ल चित्रशैली के चित्रकारों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई। इनमें से कुछ अपने चित्रों के द्वारा ही अमर हो गये।" चूंकि चित्रांकन परम्परा के इस युग पर महानतम् मुग़ल शासक अकबर का हाथ था, अतः इस चित्रशैली पर देश की विभिन्न शैलियों का प्रभाव पड़ा और इस शैली ने अनेक विशिष्ट शैलियों पर व्यापक प्रभाव डाला।

जहाँगीरकालीन चित्रकला

बादशाह अकबर के पुत्र **जहाँगीर** के काल में मुगल चित्रशैली चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई जो कि 'स्वर्ण युग' के नाम से विख्यात है। उसे अपने पिता के समान सभी कलाओं में रूचि थी, विशेषकर चित्रकला में। वह स्वयं एक कुशल चित्रकार तथा अच्छा समीक्षक था। उसके काल में बाद के समय के चित्रों पर विदेशी प्रभाव आने लगा। अकबर के समान ही जहाँगीर चित्रकारों को उचित संरक्षण तथा उपाधियाँ प्रदान करता था। **मानवाकृतियों का जितना सजीव और वास्तविक चित्रण जहाँगीर के काल में हुआ, उतना पहले कभी नहीं हुआ था।**

जहाँगीर को चित्रों का संग्रह करने का भी शौक था। जहाँगीर के काल के चित्रों में बारीक कार्य का भारी महत्व है। उसके समय में **फुटकर चित्र** तथा **प्राकृतिक चित्रण** की विशेषता भी रही। जहाँगीर स्वयं की, अपनी रानी की तथा परिवार के सदस्यों के साथ अपनी शबीहे (व्यक्ति चित्र/पोट्रेट) बनवाता था। वह चित्रकला का इतना बड़ा पारखी था कि चित्र बनाने वाले कलाकार का नाग चित्र देखकर बता देता था, यही नहीं यदि एक चित्र कई कलाकारों द्वारा बनाया गया होता था, तो वह यह भी बता देता था कि कौन सा भाग किस कलाकार ने बनाया है।[11]

जहाँगीर के समय चित्रित ग्रन्थों में प्रमुख है– **"कलील व दमनह"** तथा **"जहाँगीरनामा" आदि जहाँगीरनामा की बादशाह जहाँगीर वाली निजी प्रति जिसका कुछ भाग नष्ट हो चुका है, वर्तमान समय में "रामपुर स्टेट लाइब्रेरी" में सुरक्षित है।**[12] इसके काल में चित्रों के एल्बम भी बनते थे, जिन्हें **"मुरक्का"** कहा जाता था। इसके काल के प्रमुख चित्रकारों में अक़ारिजा, अबुल हसन, मंसूर, मनोहर, दौलत, बिशनदास तथा फारूख बेग आदि हैं। जहाँगीरकालीन कुछ चित्रकर्तियों के नाम, जैसे– रूकइयाबानो, साइफाबानो तथा नादिराबानो आदि के नाम भी मिलते हैं।[13]

जहाँगीर के समय में यूरोपियनों का आना–जाना होने के कारण यूरोपीय चित्रांकन भी हुआ तथा बाद में ईरानी प्रभाव पुनः कम होने लगा।

शाहजहाँकालीन चित्रकला

जहाँगीर की मृत्यु के बाद उसके पुत्र खुर्रम **'शाहजहाँ'** के सिंहासन पर बैठने पर मुग़ल साम्राज्य का वैभव चरम पर पहुँच चुका था। शाहजहाँ यद्यपि कला रसिक था परन्तु वह वस्तुतः महान निर्माणकर्ता तथा वास्तुकला प्रेमी था। निःसन्देह उसके काल में चित्र परम्परा चलती रही, परन्तु उसके

पूर्वजों की भांति चित्र परम्परा का विकास नहीं हो पाया था। यानी मुग़ल चित्रशैली शहंशाहों की रूचियों तथा मनोवृत्तियों में बंधकर चली आ रही थी। चित्र परम्परा के प्रति शाहजहाँ की उदासीनता का आभास पाकर दरबारी चित्रकार भी अब **चित्रशैली** में कृतिमता का भाव लाने लगे थे। यद्यपि कुछ चित्र अत्यन्त सुन्दर बने हैं।

शाहजहाँकालीन चित्रों में राजसी शानो–शौकत, अदब–कायदे, मुग़ल वैभव, सोने–चाँदी के रंगों से भव्यता तो बहुत आ गई, परन्तु चित्रों में स्वाभाविकता के स्थान पर कृतिमता भी आ गई। शाहजहाँ के काल की एक अन्य प्रमुख विशेषता **'स्याह कलम'** भी है, जिसमें आकृति के एक–एक बाल को अत्यन्त बारीकी से चित्रित किया जाता था। शाहजहाँ के काल में अनेक विषयों पर चित्रण हुआ, जैसे– पूर्वजों व सम्मानित व्यक्तियों के चित्र, गोष्ठियों के चित्र, राजसी वैभव सम्बन्धी चित्र, युवतियों व बेगमों के चित्र तथा राजदूतों के चित्र आदि। इस काल में पाण्डुलिपि चित्रण भी हुआ, लेकिन शाहजहाँ के काल के अन्तिम समय में पूर्ण होने वाला चित्रित ग्रन्थ **"पादशाहनामा"** शाहजहाँकालीन सर्वोत्तम कृतियों में से एक है, जिसके अनेक पृष्ठ कई संग्रहालयों में पहुंच गये हैं तथा एक विशेष भाग **'ब्रिटेन के विंडसर महल'** के संग्रह में प्राप्त है। इसके समय के प्रमुख चित्रकारों मे बिशनदास, मनोहर (जहाँगीरकालीन) के अतिरिक्त विचित्रर, बालचन्द, मुकुन्द तथा होनहार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यद्यपि शाहजहाँ के काल में मुग़ल चित्रशैली में पतन के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे थे, तथापि शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र **दाराशिकोह** जो कि प्रतिभा सम्पन्न तथा कलानुरागी शहजादा था, उसने चित्र परम्परा को संरक्षण दिया। दाराशिकोह द्वारा बनवाया गया चित्रों का एक एल्बम जिसमें उसके स्वयं के हस्ताक्षर भी हैं, वह आज **'इण्डिया ऑफिस, लाइब्रेरी लन्दन'** में सुरक्षित है। शायद चित्र परम्परा पुनः अपनी आत्मा को प्रापत करने लगी थी, परन्तु दुर्भाग्य से शाहजहाँ दाराशिकोह को उसी के छोटे भाई औरंगजेब ने अकाल ही मरवा दिया।

मुग़ल चित्रकला का पतन

शाहजहाँ के बाद **औरंगजेब** शासक बना जो बहुत ही कट्टर तथा धर्मान्ध शासक था। उसने चित्र बनाने की परम्परा को इस्लाम के विरूद्ध समझते हुये इसे बिल्कुल भी आश्रय नहीं दिया। **यही वह समय था जब मुग़ल चित्रशैली अपना दम तोड़ने लगी।** यद्यपि कुछ चित्रकार औरंगजेब के काल में कार्य तो करते थे परन्तु उन्हें किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं मिलता था। यद्यपि औरंगजेब की ही आज्ञा से परिवारीजनों व कैदियों आदि की यथार्थ स्थिति जानने हेतु कुछ चित्र अवश्य बनवाये गये परन्तु चित्र परम्परा का तो पतन हो ही रहा था। अनेकों प्रतिभावान दरबारी चित्रकार हतोत्साहित होकर जीवन–यापन हेतु अथवा काम की तलाश में इधर–उधर बिखरते व भटकते रहे।

हतोत्साहित चित्रकार जिन प्रान्तों, क्षेत्रों, पहाड़ों आदि पर गये, वहां के स्थानीय शासकों ने उनकी प्रतिभा का सम्मान करते हुए आश्रय दिया। इस तरह वहां अनेक **'पहाड़ी चित्रशैलियों'** का जन्म हुआ। मुग़ल चित्रशैली ने अन्य भारतीय चित्रशैलियों पर भी व्यापक प्रभाव डाला, जिनमें **राजस्थानी चित्रशैली** का विशेष महत्व है। मुग़लकाल में चित्र परम्परा के अन्तर्गत **सुलिपि कला (अक्षर लेखन)** का भी विकास हुआ। इसके अन्तर्गत निम्न लिपियों का विकास हुआ– **कूफी (कोण वाली), नस्ख (मुड़े अक्षरों वाली), नस्तालीख (बहुत बड़े अक्षरों वाली), शिकिस्त (नस्तालीख का एक**

रूप)।[14] यद्यपि उपरोक्त लिपियां फारस की थीं परन्तु मुग़ल इन्हें भारत में लाये।

मुग़ल चित्रकला का ऐतिहासिक महत्व

मुग़ल चित्रशैली का प्रारम्भ ग्रन्थ चित्रण से हुआ तथा जिसने समय के साथ–साथ व्यक्ति चित्रण (Protrait) में उत्कृष्टता प्राप्त की, अपने विकास के चरमोत्कर्ष को प्राप्त करते हुये तथा ईरानी प्रभाव से मुक्त होकर अन्ततः धीरे–धीरे अनेक चित्रशैलियों में मिश्रित हो गई। ऐतिहासिक दृष्टि से मुग़ल चित्रशैली अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती है, क्योंकि मुग़ल चित्रशैली के परिवेश में मुग़ल सल्तनत का सम्पूर्ण इतिहास समाहित है। मुग़लकालीन भारत की तथ्यात्मक तथा प्रमाणिक जानकारी के लिये मुग़ल चित्रशैली अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है। यह भी संभव जान पड़ता है कि अपने शासन की सामाजिक प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता के लिये मुग़ल शासकों ने **'कला'** को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार किया।[15]

तत्कालीन इतिहास पर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि शासकों द्वारा **'कला'** को जितना सम्मान व संरक्षण प्राप्त होता गया, शासकों को उतनी ही अधिक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती गई। बाबर से लेकर औरंगजेब के समय तक भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक व साहित्यिक उत्थान–पतन का वास्तविक स्वरूप तत्कालीन चित्रों में स्पष्ट रूप से विद्यमान है। इसके विपरीत कला के प्रति जितनी उदासीनता एवं उपेक्षा बरती गई, शासकों के लिये भी प्रजा प्रेम में उतनी शिथिलता आती गई। यही कारण है कि हुमायूँ, अकबर, बाबर व जहाँगीर जैसे दूरदर्शी शासकों ने कला का हृदय से सम्मान किया और देश के कलाकारों को हृदय से संरक्षण व राजकीय सम्मान दिया तथा कला के प्रचार–प्रसार के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहे।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति के इतिहास के महत्वपूर्ण तत्व के रूप में 'चित्रकला' का सदैव महत्व रहा है। चाहे वह आदिकाल हो या प्राचीनकाल या मध्यकाल। मुग़ल चित्रशैली अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।[16] इसके नये संविधान, नई साज–सज्जायें, नये भाव एवं नये विषय आदि मुग़ल चित्रशैली को महत्वपूर्ण बनाते हैं। इससे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक अभ्युन्नति की दिशा में भी योगदान मिला।[17] मुग़ल चित्रकला रूपी सूर्योदय हुमायूँकाल में हुआ, अकबर के राज्यकाल में अपने तेज को प्राप्त हुआ तथा जहाँगीर के काल में जगमगाते हुए स्थिर रहा। यही समय 'मुग़ल चित्रकला' का स्वर्ण युग था। शाहजहाँ का समय मुग़ल शैली के अवसान का काल रहा और औरंगजेब के राज्यकाल में मुग़ल चित्रशैली का पतन हो गया। इसके बाद भी भारतवर्ष के इतिहास में मुग़लकालीन षासन और समाज की सौन्दर्यप्रियता का ऐसा उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलता।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. वर्मा, अविनाश बहादुर, *''भारतीय चित्रकला का इतिहास''*, प्रकाश बुक डिपो (बरेली), प्रथम संस्करण, 1968, ISBN-81-7977-195-4, पृ0 **8**
2. प्रताप, रीता, *''भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास''*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (जयपुर), 15वाँ संस्करण, 2014, ISBN-978-93-5131-042-6, पृ0 **107**

[3]. डॉ0 अग्रवाल, गिर्राज किशोर, *''कला और कलम''*, अशोक प्रकाशन मन्दिर (अलीगढ़), 13वाँ संस्करण, 2009, पृ0 **33**

[4]. वही, पृ0 **107**

[5]. डॉ0 चन्द्रकान्ता, *''भारतीय चित्रकला''*, राधा प्रकाशन मन्दिर (आगरा–2), 2003, पृ0 **70**

[6]. प्रताप, रीता, ''भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (जयपुर), 15वाँ संस्करण, 2014, ISBN-978-93-5131-042-6, पृ0 **126**

[7]. ब्राउन, परसी, *''इण्डियन पेंटिंग''*, Y.M.C.A. Publication House, 5th Ed., Calcultta, 1947, पृ0 **48**

[8]. ब्राउन, परसी, *''इण्डियन पेंटिंग अण्डर द मुगल्स''*, (ऑक्सफोर्ड 1924), पृ0 **54**

[9]. डॉ0 अग्रवाल, गिर्राज किशोर, *''कला और कलम''*, अशोक प्रकाशन मन्दिर (अलीगढ़), 13वाँ संस्करण, 2009, पृ0 **178**

[10]. डॉ0 चन्द्रकान्ता, *''भारतीय चित्रकला''*, राधा प्रकाशन मन्दिर (आगरा), 2003, पृ0 **78**

[11]. वर्मा, अविनाष बहादुर, *''भारतीय चित्रकला का इतिहास''*, प्रकाश बुक डिपो (बरेली), प्रथम संस्करण, 1968, ISBN-81-7977-195-4, पृ0 **134**

[12]. प्रताप, रीता, *''भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास''*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (जयपुर), 15वाँ संस्करण, 2014, ISBN-978-93-5131-042-6, पृ0 **144**

[13]. डॉ0 अग्रवाल, गिर्राज किशोर, *''कला और कलम''*, अशोक प्रकाशन मन्दिर (अलीगढ़), 13वाँ संस्करण, 2009, पृ0 *186*

[14]. डॉ0 अग्रवाल, गिर्राज किशोर, *''कला और कलम''*, अशोक प्रकाशन मन्दिर (अलीगढ़), 13वाँ संस्करण, 2009, पृ0 *191*

[15]. प्रताप, रीता, *''भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास''*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (जयपुर), 15वाँ संस्करण, 2014, ISBN-978-93-5131-042-6, पृ0 **160**

[16]. गैरोला, वाचस्पति, *''भारतीय चित्रकला''* (इलाहाबाद), 1963, पृ0 **187–188**

[17]. प्रताप, रीता, *''भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास''*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (जयपुर), 15वाँ संस्करण, 2014, ISBN-978-93-5131-042-6, पृ0 **159**